ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०८
दिनांक– शुक्रवार, 29 जनवरी, 2021

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 19.0 एवं 7.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 89 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 63 प्रतिशत, हवा की औसत गति 6.3 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाष अवधि औसतन 3.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 13.6 एवं दोपहर में 18.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(30 जनवरी–03 फरवरी, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 30 जनवरी–03 फरवरी, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूरे पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में कोल्ड–डे (Cold Day)/शीतलहर की स्थिति की बने रहने की संभावना है। हालाँकि दोपहर तक मौसम के साफ होने का अनुमान है। सुबह में मध्यम से घना कुहासा छा सकता है।
- पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 15 से 17 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 5 से 7 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 9 से 12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम युरिया को 500 लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करे। समय से बोयी गई गेहुँ की 60–65 दिनों की अवस्था में तीसरी सिंचाई करें।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 से 3 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बसन्तकालीन ईख, शकरकन्द, गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। अक्टुवर–नवम्बर महीनों मे रोपी गई ईख की फसल में हल्की सिंचाई करे। जो किसान भाई ईख लगाना चाहते हैं, खेत की तैयारी कर बुआई शुरु कर सकते है।
- मक्का की फसल जो 50–60 दिनों की अवस्था में है, उसमें 40 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन कर मिट्टी चढ़ा दें। आलू–मक्का अंतवर्ती खेती से तैयार आलू की निकाई–गुराई करें तथा मक्का में सिंचाई कर 3–4 दिन बाद 40 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नेत्रजन का उपरिवेषन करे।
- सरसों की फसल में लाही कीड़ों का आक्रमण हो सकता है । बचाव के लिए डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें । विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में 2 प्रतिषत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें।
- आम के बगीचों मे मंजर आने के पहले कार्बारिल ,सेविनद्ध दवा का 2 ग्राम अथवा डाईमेथोएट दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर पेड़ों पर छिड़काव करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों जैसे–भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुआँ की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। सब्जियों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी–गली गोबर खाद का प्रबंध करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन सब्जियों की छोटे–छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल षाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है।
- झुलसा रोग से बचाव के लिए आलू की फसल में रिडोमिल नामक दवा का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। खेतों में नमी को देखते हुए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली, मटर,बैंगन, टमाटर एवं मिर्च फसलों में निराई–गुराई एवं सिंचाई करते रहें। इन फसलों में रोग–व्याधि से बचाव हेतु कार्बेन्डाजीम (वेविस्टीन)/ 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें। गरमा सब्जी की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेष कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाष फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- कोल्ड–डे (Cold Day)/शीतलहर के प्रभाव से वचाव हेतु दुधारु पशुओं को पुआल का मोटा बिछावन लगावें एवं खिड़की, दरवाजे पर बोरा लगाएं। खाने में तेलहन अनाज को पीसकर दें एवं सेंधा नमक 50 ग्राम प्रति दिन दें। हरा चारा के साथ सूखा भुसा आवष्य मिलाए। दुधारु एवं गाभीन गायों को प्रति दिन 1 किलोग्राम अतिरिक्त दाना मिश्रण दें। साफ एवं गुनगुना पानी पुरे दिन पिलाए।

आज का अधिकतम तापमानः 14.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 8.5 डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः 7.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.2 डिग्री कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी